E Learning Study Material
By Prof YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE ARA
VKS UNIVERSITY ARA BIHAR
BA PART THIRD ECONOMICS HONS
PAPER SIX

Effects of HIGH TARIFFS

उच्च प्रशुल्क काल का प्रभाव

सन् 1861 के मॉरिल प्रशुल्क (MORILL TARIFF) ने उच्च प्रशुल्क प्रणाली का उद्घाटन किया। इससे सन् 1833 से 1861 तक प्रचलित प्रशुल्क न्यूनीकरण नीति को पूर्णतः उलट दिया। गृह युद्ध काल में न केवल मॉरिल प्रशुल्क को बनाये रखा गया। अपितु उस काल में कांग्रेस का ऐसा कोई भी सत्र नहीं हुआ जिसमें प्रशुल्क दर में वृद्धि नहीं की गयी हो। 1864 का प्रशुल्क अधिनियम इसमें बहुत महत्वपूर्ण था जिसने सभी वस्तुओं पर प्रशुल्क की दरों को बढ़ा दिया। प्रशुल्क की औसत दर को बढ़ा कर 47 प्रतिशत कर दिया गया। गृह-युद्ध को संचालित करने के लिए मुद्रा की व्यवस्था की जानी आवश्यक थी सामरिक उद्योग संरक्षण की माँग कर रहे थे, औद्योगिक क्षेत्र के उत्पादक ऊँची प्रशुल्क दर के लिए शोर मचा रहे थे ताकि वे आरोपित किये

जा रहे आन्तरिक उत्पादन शुल्कों की विस्तृत प्रणाली के प्रभाव को दूर कर सके। गृह-युद्ध के बाद दक्षिणी राज्य पुनः कांग्रेस में लौट तो अवश्य आए थे किन्तु अब उनकी शक्तियों में महान ह्रास हो गया था। फलतः उच्च संरक्षण शुल्क का प्रचलन एवं प्रभाव क्रियाशील रहा।

लेकिन ये गृह युद्धकालीन शुल्क अवैज्ञानिक एवं अनावश्यक रूप से अधिक ऊँचे थे। अतः स्वभावतः गृह युद्धोत्तर वर्षों में शुल्क सुधारकों द्वारा उनकी कड़ी आलोचनाएँ की गयी। 1870 के शुल्क अधिनियम ने कुछ वस्तुओं के शुल्क को कम करने का प्रयास किया। फिर तत्पश्चात 1872 ई० में प्रायः सभी वर्ग की वस्तुओं के शुल्क में 10 प्रतिशत की कमी की गयी। चाय, कॉफी आदि पर करों (taxes) को बिल्कुल समाप्त कर दिया गया। किन्तु यह कमी काफी कम समय तक ही लागू रही। 1873 ई० में फिर आर्थिक संकट शुरू हो गया जिसके 1872 ई में शुल्क दरों में पुनः वृद्धि की गयी तथा 1872 ई० के अधिनियम को समाप्त कर दिया गया।

1881 ई० तक सरकारी आय में प्रयाप्त सुधार हो गया। अतः शुल्क के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए 1883 ई में एक शुल्क आयोग (Tariff Commission) की स्थापना की गयी। स्थापना का वर्ष 1883 था।